आपातकाल में संजीवनी : अग्निशमन प्रशिक्षण – खण्ड १

अग्निशमन प्रशिक्षण

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

श्री. नितिन विनायक सहकारी

(बी.ई. [एम.], मुख्य अभियंता, मर्चंट नेवी)

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ५३, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

जून २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख १० सहस्र प्रतियां !

सनातन संस्था के संस्थापक सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

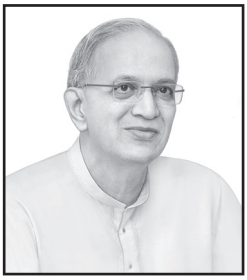

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से १५.५.२०२४ तक १२७ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५८ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) की स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका मार्गदर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

संकलनकर्ता का परिचय

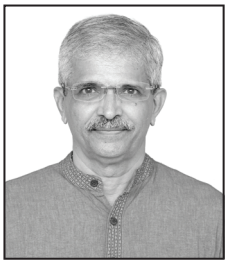

श्री. नितिन विनायक सहकारी

श्री. नितिन सहकारी 'मर्चंट नेवी' में 'मुख्य अभियंता' के पद पर सेवारत थे । जीवन की कुछ समस्याओं से बाहर निकलने का एकमात्र मार्ग है 'साधना करना', यह श्री. सहकारी सनातन के मार्गदर्शन से समझ गए । तब उन्होंने १९९८ में साधना आरम्भ की । तदुपरान्त समय-समय पर हुई बुद्धि-अगम्य अनुभूतियों के कारण उनकी ईश्वर एवं 'सनातन संस्था' के प्रति श्रद्धा बढने लगी। प्रथम कुछ वर्ष उन्होंने खाली समय में और छुट्टी के दिन सत्संग लेना, व्याख्यान देना आदि अध्यात्मप्रसार की सेवाएं कीं । कुछ समय के लिए उन्होंने दैनिक 'सनातन प्रभात' के गोवा स्थित कार्यालय के सम्पादकीय विभाग में सेवा की । जून २०१५ से उन्होंने नौकरी के लिए जहाज पर जाना बंद कर सनातन के मार्गदर्शन में पूर्णकालीन सत्सेवा आरम्भ की । वर्तमान में वे सनातन के रामनाथी, गोवा स्थित आश्रम में ग्रन्थ सम्पादन की सेवा कर रहे हैं ।

अनुक्रमणिका

१. प्रस्तावना / पूर्वविवेचन ९

२. आग का शास्त्र ११

२ अ. आग से मिलनेवाली उष्णता का उद्गम ११

२ आ. आग से सम्बन्धित परिभाषाएं १२

२ इ. आग के घटक २ ई. आग के चरण १३

३. अग्निशमन १९

३ अ. आग को देखने पर आप क्या करोगे ? ९१

३ आ. आग का शोध लगानेवाले उपकरण एवं उनका उपयोग २१

३ इ. अग्निशमन की पद्धतियां ३ ई. अग्निशमन के माध्यम २३

४. अग्निशमन उपकरण २७

५. अग्निशमन दल ४४

५ अ. अग्निशमन दल के कर्मचारी के (फायरमैन के) कर्तव्य ४५

५ आ. अग्निशमन दल के जवानों में आवश्यक गुण ४५

६. प्रसंग तथा प्रासंगिक समाधान-योजना ४६

७. अग्निप्रतिबन्धक समाधान-योजना ५३

८. जलने से होनेवाले घाव एवं प्राथमिक उपचार ७०

९. आग की कुछ प्रसिद्ध घटनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन ७६

१०. आध्यात्मिक शक्ति से अग्निप्रकोप रोकना ८१

११. 'अग्निशमन प्रशिक्षण'संबंधी सनातन का प्रबोधनात्मक कार्य ८४

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी के प्रयोग हेतु सनातन का समर्थन !

संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानती है । मूलतः संस्कृत ही हिन्दी भाषा की जननी है। अतः सनातनके ग्रन्थोंमें -

१. शब्दों के नीचे बिन्दु (नुक्ता) नहीं दिया जाता।

२. शुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दी का उपयोग किया जाता है। पाठकों की सुविधा के लिए कठिन शब्दों के आगे कोष्ठक में वैकल्पिक अन्य भाषा के शब्द का उल्लेख किया जाता है।

३. हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के कारण विविध प्रान्तों में एक ही अर्थ में एक से अधिक शब्द प्रचलित होते हैं। अनेक बार शब्द की वर्तनी में अन्तर होता है। इन कारणों से पाठकों को भाषा कठिन अथवा अशुद्ध प्रतीत न हो, इस हेतु ग्रन्थ में विभिन्न स्थानों पर हमने कोष्ठक में वैकल्पिक शब्द देने का प्रयास किया है; तथापि पृष्ठसंख्या बढने के भय से प्रत्येक बार ऐसा करना सम्भव नहीं। - **(सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत आठवले**

भूमिका

'एक छोटीसी चिनगारी पूरे जंगल को राख कर देती है ।', इस आशय की एक उक्ति अंग्रेजी में है । केवल इस उक्ति से आग की दाहकता, उसकी संहारकता अथवा उसके भीषण परिणामों की गम्भीरता ध्यान में नहीं आती; अपितु आग का प्रत्यक्ष अनुभव करनेवाले ही उसकी कल्पना कर सकते हैं । यद्यपि 'आग' दैनिक जीवन-व्यापार का अत्यावश्यक घटक है, तब भी उसके सन्दर्भ में नियन्त्रित तथा अनियन्त्रित की जो लक्ष्मणरेखा होती है, वह अधिक महत्त्वपूर्ण है । मनुष्य द्वारा सामान्यत: प्रयुक्त आग के सर्व प्रकार नियन्त्रित होते हैं; किन्तु किसी विशेष प्रसंग में आग नियन्त्रण की लक्ष्मणरेखा लांघ सकती है । ऐसी स्थिति में उसपर कौन से उपचार आवश्यक हैं, आग के सम्पर्क में अधिक रहनेवालों को इसका ज्ञान होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । अग्निशमन के सन्दर्भ में प्रशिक्षण बडे-बडे कारखानों, यात्री नौकाओं (जहाज), विमान आदि में दिया जाता है; परन्तु दु:ख की बात यह है कि सामान्य मनुष्य, तथा दिन के ५-६ घण्टे आग की सहायता से भोजन बनानेवाली गृहिणी आग का शास्त्र तथा अग्निशमन के उपचारों के सन्दर्भ में पूर्णत: अनभिज्ञ होती है । इस अज्ञान से कई दुर्घटनाएं घटती हैं । आग का शास्त्र, अग्निशमन के विविध माध्यम तथा उनका उपयोग करने की पद्धतियां, अनुचित माध्यमों का उपयोग करने से होनेवाले दुष्परिणाम आदि के सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एवं सरल भाषा में ज्ञान देना, इस ग्रन्थ को संकलित करने का प्रमुख उद्देश्य है ।

हिन्दू धर्म में देवऋण, पितृऋण, ऋषिऋण एवं समाजऋण, इन चार ऋणों को चुकाना प्रत्येक मनुष्य का निहित कर्तव्य माना गया है । परस्पर सहयोग एवं परोपकार से समाजऋण चुका सकते हैं । अग्निशमन प्रशिक्षण का ज्ञान आत्मसात करना तथा समय आने पर समाज के लिए उसका उपयोग करना, समाजऋण चुकाने का एक अंग है ।

अग्निप्रलय की आपत्ति के कारण राष्ट्र की जैवीय तथा वित्तीय हानि

बडी मात्रा में होती है । इस हानि को रोकने की दृष्टि से प्रयत्नरत होने का अर्थ है राष्ट्रहित एवं राष्ट्ररक्षा के कार्य में सहयोग देना । राष्ट्र के जीवन में ही समष्टि का जीवन अन्तर्भूत होता है; क्योंकि राष्ट्र जीवित रहेगा, तो ही समाज जीवित रहेगा एवं समाज जीवित रहेगा, तो ही व्यक्ति जीवित रहेगा । व्यक्ति जीवित रहेगा, तो ही साधना कर पाएगा । अतः स्वहित तथा राष्ट्ररक्षा हेतु 'अग्निशमन प्रशिक्षण' के इस विषय का महत्त्व समझना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है ।

इस ग्रन्थ में समाविष्ट ज्ञान को पढकर अग्निप्रकोप की आपत्ति से स्वयं की तथा साधना के रूप में समाज एवं राष्ट्र की रक्षा करने की क्षमता प्रत्येक व्यक्ति में उत्पन्न हो, यही श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी की उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियों ने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओं में भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओं के वाचन के माध्यम से महर्षि सनातन संस्था का मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका' के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी को 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहले के लेखन में अथवा अब भी साधकों द्वारा दिए लेखन में उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियों से सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है।